झारखण्ड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची

Jharkhand Council of Educational Research and Training, Ranchi

D.I.E.T. Campus, Ratu, Ranchi-835222, e-mail: jcert.ran@gmail.com

पत्रांकः– जे.सी.ई.आर.टी./वि.-04–12/2024/ 1325 **राँची, दिनांक –** 10 **/09/2024**

प्रेषक,

आदित्य रंजन, भा.प्र.से.

निदेशक

सेवा में,

सभी जिला शिक्षा पदाधिकारी–सह–जिला कार्यक्रम पदाधिकारी

सभी जिला शिक्षा अधीक्षक–सह–अपर जिला कार्यक्रम पदाधिकारी

सभी अतिरिक्त जिला कार्यक्रम पदाधिकारी, झारखण्ड ।

विषय :– **राज्यांतर्गत संचालित सभी सरकारी तथा गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के कक्षा VI - XII के शिक्षकों के लिए पाठ–योजना की मानक संचालन प्रक्रिया (SOP of Lesson Plan) एवं पाठ–योजना प्रारूप प्रेषण के संबंध में।**

महाशय,

उपर्युक्त विषय के संबंध में अंकित करना है कि विद्यालयों में छात्र–छात्राओं के गुणवत्तापूर्ण अध्यापन हेतु सभी विद्यालयों में साप्ताहिक विच्छेदित पाठ्यक्रम (Weekly Split syllabus) के अनुसार RAIL (Regular Assessment for Improved Learning) परीक्षा का आयोजन किया जा रहा है।

RAIL परीक्षा के साप्ताहिक आयोजन के लिए आवश्यक है कि साप्ताहिक विच्छेदित पाठ्यक्रम के अनुसार विद्यार्थियों का अध्यापन शिक्षकों द्वारा आदर्श स्थिति में किया जाय। विद्यार्थियों का आदर्श स्थिति में अध्यापन के लिए शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को पढ़ाने के पूर्व पाठ–योजना तैयार किया जाना अपेक्षित है।

पाठ–योजना में एकरूपता के लिए पाठ–योजना संबंधी सामान्य जानकारी, **पाठ–योजना की मानक संचालन प्रक्रिया"** (SOP of Lesson Plan) एवं कक्षा 6 के इतिहास विषय के साप्ताहिक विच्छेदित पाठ्यक्रम (पत्र के साथ संलग्न) के अनुसार एक पाठ–योजना का प्रारूप इस पत्र के साथ संलग्न किया जा रहा है। उक्त के आलोक में निदेश दिया जाता है कि शैक्षणिक–सत्र 2024–25 के लिए कक्षा VI - XII तक की कक्षाओं में अध्यापन हेतु शिक्षक साप्ताहिक विच्छेदित पाठ्यक्रम के आलोक में संबंधित विषयों के लिए अलग–अलग पंजी में दिये गये प्रारूप के अनुसार पाठ–योजना संधारित करते हुए कक्षा में छात्रों का अध्यापन सुनिश्चित करेंगे।

पाठ–योजना की मानक संचालन प्रक्रिया (SOP of Lesson plan)

पाठ–योजना क्या है ?

शिक्षक एक पाठ या अध्याय को पढ़ाने के लिए उसे छोटी–छोटी इकाईयों में बाँट लेते हैं जिसे हम प्रकरण कहते हैं। एक इकाई की विषय–वस्तु को एक घंटी (Period) में

N. Rani

पढ़ाया जाता है। इस विषय-वस्तु को पढ़ाने के लिए शिक्षक द्वारा एक विस्तृत रूपरेखा तैयार की जाती है जिसे हम पाठ-योजना कहते हैं।

पाठ-योजना की आवश्यकता एवं उद्देश्य :-

1. जिस प्रकार एक इंजीनियर को भवन-निर्माण के लिए नक्शा या योजना/ब्लूप्रिंट की आवश्यकता होती है उसी प्रकार शिक्षक को एक इकाई की विषय-वस्तु के अध्यापन के लिए पाठ-योजना का निर्माण करना आवश्यक होता है।
2. पाठ-योजना के माध्यम से कक्षा में शिक्षण की क्रियाओं और सहायक सामग्री की पूर्ण जानकारी हो जाती है।
3. प्रस्तुतीकरण के क्रम में निश्चितता आ जाती है।
4. इससे कक्षा-शिक्षण के समय शिक्षक की विस्मृति (Forgetfullness) की संभावना कम होती है।

पाठ-योजना की रूपरेखा :-

1. **सामान्य सूचना (General Information) :-**

   इसमें शिक्षक का नाम, माह, सप्ताह, दिनांक, कक्षा, घंटी, अवधि, अध्याय, प्रकरण एवं पृष्ठ संख्या आदि का उल्लेख होता है।

2. **अधिगम उद्देश्य (Learning Objectives) :-**

   इसमें प्रकरण पूर्ण होने के पश्चात विद्यार्थियों में विकसित होनेवाली दक्षताओं एवं कौशलों **(Skills)** का उल्लेख किया जाता है।

3. **अधिगम प्रतिफल (Learning Outcomes) :-**

   अधिगम प्रतिफल ऐसे बिंदु होते हैं जो उस ज्ञान या कौशल की व्याख्या करते हैं, जो विद्यार्थियों के पास एक पाठ्यक्रम या इकाई के अंत में होना चाहिए और जो विद्यार्थियों को यह समझने में मदद करते हैं कि वे ज्ञान और क्षमताएँ उनके लिए क्यों और किस प्रकार सहायक होंगी।

4. **शिक्षण-विधि (Teaching Method) :-**

   पाठ पढ़ाते समय शिक्षक कौन-से शिक्षण-विधि का इस्तेमाल करेंगे, उसे यहाँ लिखा जाता है।

5. **शिक्षण अधिगम सहायक सामग्री (Teaching Learning Aids) :-**

   पाठ पढ़ाने में किस प्रकार की अधिगम सामग्री (Learning Material) की आवश्यकता पड़ती है, उसका उल्लेख करना चाहिए। जैसे - मॉडल (Model), चार्ट (Chart), श्यामपट्ट (Blackboard), चॉक (Chalk), डस्टर (Duster), ऑडियो, वीडियो, पेन ड्राईव, कम्प्यूटर, लैपटॉप इत्यादि।

6. **पूर्व ज्ञान (Previous Knowledge) :-**

   पूर्व ज्ञान में विद्यार्थियों से उस विषय-वस्तु से संबंधित कुछ सवाल पूछे जाते हैं, जिससे यह ज्ञात हो सके कि उन्हें उस विषय के बारे में पहले से कितनी जानकारी है।

N. Rani

7. प्रस्तुतीकरण (Presentation) : -

पाठ–योजना के इस भाग में छात्रों के सम्मुख पाठ्य–वस्तु का शिक्षण बिंदु (Teaching Point) प्रस्तुत किया जाता है। उदाहरणस्वरूप :–

a. शिक्षण / अध्यापन बिन्दु (Teaching Points)
b. शिक्षक क्रियाशीलता (Teacher's Activities)
c. छात्र क्रियाशीलता (Student's Activities)
d. श्यामपट्ट–कार्य (Blackboard Work)
e. मूल्यांकन (Evaluation)

8. पुनरावृत्ति (Recapitulation) : -

पाठ–योजना के कार्यान्वयन के क्रम में विद्यार्थियों की पठित विषय–वस्तु पर बेहतर समझ सुनिश्चित करने के लिए उक्त प्रकरण की पुनरावृत्ति की जाती है।

9. गृह–कार्य (Home Work) : -

पाठ–योजना में प्रकरण की समाप्ति के उपरांत विद्यार्थियों को रचनात्मक गृह–कार्य दिया जाता है। शिक्षक को पाठ–योजना लेखन एवं कक्षा में उसके कार्यान्वयन में गृह–कार्य को आवश्यकतानुसार अवश्य स्थान देना चाहिए।

10. अन्य बिंदु (Other Points) :–

इसमें कक्षा समाप्ति के पूर्व विद्यार्थियों से कक्षा के संबंध में उनकी प्रतिक्रिया, शिक्षक का स्व–मूल्यांकन एवं पाठ–योजना में अपेक्षित सुधार आदि के संबंध में लिखा जाता है।

<u>पाठ–योजना के निर्माण में अनुपालन हेतु आवश्यक निर्देश</u> :–

कक्षा–शिक्षण की सफलता पाठ–योजना पर निर्भर करती है इसलिए शिक्षकों को पाठ–योजना बनाते समय निम्न बातों का ध्यान अवश्य रखना चाहिए :–

- ❖ प्रत्येक शिक्षक, वर्ग–तालिका (Class Routine) के अनुसार आवंटित कक्षा के विषय के अध्यापन के लिए अधिकृत होंगे। ससमय विषय के पाठों के अध्यापन की जवाबदेही उनकी होगी।
- ❖ प्रत्येक शिक्षक को उन्हे आवंटित कक्षा के संबंधित विषय के लिए एक पाठ–योजना पंजी संधारित करनी होगी, जिसे विद्यालय के प्रधानाध्यापक/प्राचार्य द्वारा सत्यापित किया जायेगा।
- ❖ प्रत्येक शिक्षक को कक्षा में अध्यापन के कम–से–कम एक दिन पूर्व पाठ–योजना तैयार करना होगा।
- ❖ कक्षा में अध्यापन के पूर्व उक्त पाठ–योजना को प्रधानाध्यापक/प्राचार्य द्वारा हस्ताक्षर कर सत्यापित किया जायेगा।
- ❖ शिक्षक को पाठ–योजना बनाते समय प्रकरण को एक या अधिक शिक्षण बिंदुओं में विभाजित करना चाहिए परंतु यह ध्यान रखना चाहिए कि एक पाठ–योजना में उतने ही

N. Rani

शिक्षण बिंदुओं को समाहित किया जाए जितना शिक्षण बिंदु कक्षा–अवधि में समाप्त हो जाए।

- ❖ पाठ–योजना में प्रयुक्त होने वाली शिक्षण अधिगम सहायक सामग्री तथा उसके प्रयोग विधि को सुनिश्चित कर लेना चाहिए ताकि पाठ्य–वस्तु विद्यार्थियों के लिए सुगम एवं बोधगम्य हो।
- ❖ कक्षा में शिक्षक द्वारा पाठ–योजना के प्रस्तुतीकरण में उचित शिक्षण–विधि का प्रयोग किया जाना चाहिए।
- ❖ शिक्षक को हमेशा शिक्षण बिन्दु को ध्यान में रखकर ही कक्षा में क्रियाकलाप को नियंत्रित करना चाहिए।
- ❖ कक्षा में शिक्षक एवं छात्र की क्रियाशीलता एक–दूसरे के पूरक हैं, इसका ध्यान शिक्षक को अवश्य रखना चाहिए, ताकि कक्षा में शिक्षक और छात्र की क्रियाशीलता आदर्श रहे।
- ❖ पाठ–योजना लेखन एवं शिक्षक द्वारा कक्षा में उसके कार्यान्वयन में श्यामपट्ट–कार्य का महत्वपूर्ण स्थान है, जिसका अनुपालन पाठ–योजना लेखन एवं उसके कार्यान्वयन में किया जाना चाहिए।
- ❖ पाठ–योजना के कार्यान्वयन की समीक्षा छात्रों के मूल्यांकन के आधार पर किया जाता है, जो शिक्षक को कक्षा अध्यापन के दौरान रोचक ढंग से बीच–बीच में आवश्यकतानुसार करना चाहिए।
- ❖ पाठ–योजना के कार्यान्वयन के क्रम में विद्यार्थियों की पठित विषय–वस्तु पर बेहतर समझ सुनिश्चित करने के लिए उक्त प्रकरण की पुनरावृत्ति की जानी चाहिए।
- ❖ पाठ–योजना के सफल कार्यान्वयन के उपरांत विद्यार्थियों को रचनात्मक गृह–कार्य दिया जाना चाहिए। शिक्षक को पाठ–योजना लेखन एवं कक्षा में उसके कार्यान्वयन में गृह–कार्य को आवश्यकतानुसार अवश्य स्थान देना चाहिए।

अनुलग्नक : – यथोक्त।

विश्वासभाजन

ह0/

(आदित्य रंजन)

निदेशक

ज्ञापांक– जे.सी.ई.आर.टी./वि.04–12/2024/1325 **राँची, दिनांक : 10 /09/2024**

प्रतिलिपिः– 1. प्रभारी सचिव, स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, झारखण्ड, सरकार को सूचनार्थ समर्पित।

2. राज्य परियोजना निदेशक, झारखण्ड शिक्षा परियोजना परिषद्, राँची को सूचनार्थ प्रेषित।

N. Rani

3. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, राँची को सूचनार्थ प्रेषित।
4. निदेशक, प्राथमिक शिक्षा निदेशालय, राँची को सूचनार्थ प्रेषित।
5. सभी क्षेत्रीय शिक्षा संयुक्त निदेशक / सभी अनुमंडल शिक्षा पदाधिकारी / सभी प्राचार्य, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, झारखण्ड को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यार्थ प्रेषित।

N. Rani

06/09

निदेशक
जे.सी.ई.आर.टी., राँची

पाठ–योजना पंजी का कवर पृष्ठ

झारखण्ड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची

MY SCHOOL, MY RESPONSIBILITY...

पाठ–योजना पंजी

(Lesson Plan Register)

कक्षा : VI　　　　　　　　　　　　　　　　　　विषय : इतिहास

शिक्षक का नाम – ____________________

पदनाम – ____________________

विद्यालय का नाम – ____________________

प्रखण्ड – ____________________

जिला – ____________________

राज्य – झारखण्ड

N. Rani

विषय–सूची–सह–साप्ताहिक विच्छेदित पाठ्यक्रम

कक्षा – VI | **विषय – इतिहास**

क्रम संख्या	पाठ का नाम	पृष्ठ संख्या	माह	सप्ताह	पाठ के उप विषय–वस्तु	पृष्ठ संख्या	Competency / L.O.
1.	कब, कहाँ और कैसे	6 से 16	मई	प्रथम	अतीत की कहानी है इतिहास, क्यों आवश्यक है इतिहास का ज्ञान, लोग कहाँ रहते थे।	6–9	• विभिन्न प्रकार के स्रोतों – पुरातात्विक, साहित्यिक आदि पहचानते हैं और अवधि के इतिहास के पुनर्निर्माण में उनके उपयोग का वर्णन करते हैं। • महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक पुरास्थलों तथा अन्य स्थानों को भारत की रूपरेखा मानचित्र पर अंकित करते हैं। • विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं से संबंधित जानकारी का समन्वय करते हैं।
				द्वितीय	देश के नाम, काल–निर्धारण। अतीत की जानकारी।	9–13	
				तृतीय	प्राचीन काल में झारखण्ड, इतिहास और तिथियाँ। अभ्यास, पुनरावृत्ति।	13–16	
				चतुर्थ	गृह–कार्य (Pg 6-16)		
			जून	प्रथम	गृह–कार्य (Pg 6-16)		
2.	आरंभिक समाज	17 से 27		द्वितीय	आदिमानव का निवास स्थान, पाषाणकालीन औजारों का निर्माण, वस्त्रों का निर्माण, आदिमानव के बारे में जानकारी के स्रोत, आग की खोज।	17–22	• प्राचीन काल के दौरान हुए व्यापक बदलाव की व्याख्या करते हैं, जैसे – शिकार–संग्रहण की अवस्था। • महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक पुरास्थलों तथा अन्य स्थानों को भारत की रूपरेखा मानचित्र पर अंकित करते हैं। • प्रारंभिक मानव संस्कृतियों की विशिष्ट विशेषताओं को पहचान पाते हैं, और उनके विकास के बारे में बात करते हैं।
				तृतीय	जलवायु परिवर्तन, शैल चित्रकारी।	22–25	
				चतुर्थ	अभ्यास, पुनरावृत्ति।	26–27	
3.	आरंभिक किसान एवं चरवाहे	28 से 35	जुलाई	प्रथम	कृषि की शुरूआत।	28–29	• प्रारंभिक मानव संस्कृतियों की विशिष्ट विशेषताओं को पहचान पाते हैं, और उनके विकास के बारे में बात करते हैं। • प्राचीन काल के दौरान हुए व्यापक बदलावों की व्याख्या करते हैं, जैसे–कृषि की शुरूआत।
				द्वितीय	पशुपालन की शुरूआत, पहिया का आविष्कार।	29–30	
				तृतीय	स्थायी जीवन की ओर, आरंभिक गाँव की स्थापना, पुरातात्विक साक्ष्य, सूक्ष्म निरीक्षण–मेहरगढ़, कोल्डिहवा।	30–33	
				चतुर्थ	अभ्यास, पुनरावृत्ति।	34–35	
4.	आरंभिक नगर	36 से 46	अगस्त	प्रथम	हड़प्पा सभ्यता की कहानी, हड़प्पा की नगरीय विशेषता।	36–38	• प्रारंभिक मानव संस्कृतियों की विशिष्ट विशेषताओं को पहचान पाते हैं और उनके विकास के बारे में बात करते हैं।
				द्वितीय	नगरीय जीवन, अनूठी	38–42	

N·Rani.

					शिल्पकारी।		• प्राचीन काल के दौरान हुए व्यापक बदलावों की व्याख्या करते हैं। • सिंधु नदी के किनारे में आरंभिक शहर आदि और एक स्थान पर हुए बदलावों को दूसरे स्थान पर हुए बदलावों के साथ जोड़कर देखते हैं।
				तृतीय	विश्व की अन्य सभ्यताएँ।	42–44	
				चतुर्थ	अभ्यास, पुनरावृत्ति।	45–46	
5.	जीवन की विभिन्न शैलियाँ	47 से 57	सितंबर	प्रथम	समकालीन कांस्ययुगीन व्यवस्था, ऋग्वेद क्या बताता है, सामाजिक जीवन।	47–50	• प्रारंभिक मानव संस्कृतियों की विशिष्ट विशेषताओं को पहचान पाते हैं, और उनके विकास के बारे में बात करते हैं।
				द्वितीय	आजीविका, शासन व्यवस्था, धार्मिक जीवन, इनामगाँव – समकालीन कांस्ययुगीन व्यवस्था।	50–52	
				तृतीय	महापाषाण, क्या है मेगालिथ । अभ्यास, पुनरावृत्ति।	52–57	
				चतुर्थ	पुनरावृत्ति (Pg 17-57)		
				प्रथम	(SA-I) (Tentative)		
6.	प्राचीन राजव्यवस्था	58 से 65	अक्टूबर (SA-I)	द्वितीय	शासकों का चयन, जनपद एवं महाजनपद।	58–60	• महत्त्वपूर्ण साम्राज्यों, राजवंशों के विशिष्ट योगदानों को उदाहरणों के साथ सूचीबद्ध करते हैं।
				तृतीय	सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन।	60–61	
				चतुर्थ	आर्थिक व्यवस्था, मगध तथा वज्जि महाजनपद का एक परिचय, अभ्यास, पुनरावृत्ति।	62–65	
7.	नए धर्मों का उदय	66 से 76	नवम्बर	प्रथम	जैन धर्म, जैन धर्म की शिक्षाएँ।	66–68	• प्राचीन काल के विभिन्न धर्मों और विचारों के मूल तत्वों और मूल्यों का विश्लेषण करते हैं।
				द्वितीय	जैन धर्म का प्रचार, जैन धर्म की देन, पारसनाथ। बौद्ध धर्म, बौद्ध धर्म की शिक्षाएँ, बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार, बौद्ध धर्म की देन, उपनिषद्।	68–71	
				तृतीय	इट्खोरी एक तीर्थ स्थल। अभ्यास, पुनरावृत्ति।	71–76	
				चतुर्थ	गृह-कार्य (Pg 58-76)		
			दिसंबर	प्रथम	गृह-कार्य (Pg 58-76)		

N. Rani

8.	सम्राट अशोक	77 से 85		द्वितीय	एक बड़ा राज्य-एक साम्राज्य, सम्राट अशोक के साम्राज्य का प्रशासन, कलिंग युद्ध।	77-81	• महत्त्वपूर्ण साम्राज्यों, राजवंशों के विशिष्ट योगदानों को उदाहरणों के साथ सूचीबद्ध करते हैं, जैसे-अशोक के शिलालेख आदि।
				तृतीय	अशोक का धम्म।	81-83	
				चतुर्थ	अभ्यास, पुनरावृत्ति।	84-85	
9.	ग्रामीण एवं शहरी व्यवस्था	86 से 93	जनवरी	प्रथम	कृषि में गहनता, सिंचाई, गाँव के निवासी, शहरों का विकास।	86-89	• धर्म, कला, वास्तुकला आदि के क्षेत्र में भारत का बाहर के क्षेत्रों के साथ संपर्क और उस संपर्क के प्रभाव के बारे में बताते हैं।
				द्वितीय	सिक्के, नगर, बेरीगाजा बंदरगाह।	89-90	
				तृतीय एवं चतुर्थ	अरिकामेड्डू - सूक्ष्म निरीक्षण । अभ्यास, पुनरावृत्ति।	91-93	
10.	राजनीतिक विकास	94 से 101	फरवरी	प्रथम	समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त द्वितीय।	94-95	• महत्त्वपूर्ण साम्राज्य, राजवंशों के विशिष्ट योगदानों को उदाहरणों के साथ सूचीबद्ध करते हैं, जैसे-गुप्त सिक्के, पल्लवों द्वारा निर्मित रथ मंदिर आदि।
				द्वितीय	प्रशासनिक व्यवस्था, नालंदा विश्वविद्यालय, गुप्त वंश के बाद के शासक, हर्षवर्धन, प्रशासनिक व्यवस्था।	95-97	
				तृतीय	दक्षिण भारत - पल्लव और चालुक्य, पल्लवों का प्रशासन, ग्राम्य जीवन। अभ्यास, पुनरावृत्ति।	98-101	
11.	संस्कृति एवं विज्ञान	102 से 112		चतुर्थ	प्राचीन काल में साहित्य, उपनिषद्, पुराण, महाकाव्य, बौद्ध एवं जैन साहित्य, यात्रियों का विवरण, कला एवं स्थापत्य, लौह स्तंभ, इमारतें, मंदिर।	102-105	• संस्कृति और विज्ञान के क्षेत्र में जैसे - खगोल विज्ञान, चिकित्सा, गणित और धातुओं का ज्ञान आदि में भारत के महत्त्वपूर्ण योगदान को रेखांकित करते हैं।
			मार्च (SA-II)	प्रथम	स्तूप तथा मंदिर का निर्माण कैसे होता था, चित्रकला, महाबलीपुरम का एकाश्मिक मंदिर, विज्ञान। झारखण्ड की स्थापत्य कला। अभ्यास, पुनरावृत्ति।	105-112	
मार्च (द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ सप्ताह) {पुनरावृत्ति (Pg. 77-112) & SA-II}							

N·Rani

पाठ-योजना का प्रारूप

पाठ-योजना सं0-01

शिक्षक का नाम -

माह - मई **सप्ताह - प्रथम** **दिनांक -**

कक्षा - VI **घंटी -** **अवधि -**

अध्याय-1. कब, कहाँ और कैसे

प्रकरण - अतीत की कहानी है इतिहास, क्यों आवश्यक है इतिहास का ज्ञान, लोग कहाँ रहते थे?

पृष्ठ संख्या - 06-09

अधिगम उद्देश्य :-

अधिगम प्रतिफल :-

शिक्षण-विधि :-

शिक्षण अधिगम सहायक सामग्री :-

पूर्व ज्ञान :-

N. Rani

प्रस्तुतीकरण (Presentation)

शिक्षण / अध्यापन बिन्दु (Teaching Points)	शिक्षक क्रियाशीलता (Teacher's Activities)	छात्र क्रियाशीलता (Student's Activities)	श्यामपट्ट – कार्य (Blackboard Work)	मूल्यांकन (Evaluation)

N. Rani

प्रस्तुतीकरण (Presentation)

शिक्षण / अध्यापन बिन्दु (Teaching Points)	शिक्षक क्रियाशीलता (Teacher's Activities)	छात्र क्रियाशीलता (Student's Activities)	श्यामपट्ट – कार्य (Blackboard Work)	मूल्यांकन (Evaluation)

शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची
मनसोन्मेष शोध नेतृत्व
JCERT

N·Rani

प्रस्तुतीकरण (Presentation)

शिक्षण / अध्यापन बिन्दु (Teaching Points)	शिक्षक क्रियाशीलता (Teacher's Activities)	छात्र क्रियाशीलता (Student's Activities)	श्यामपट्ट – कार्य (Blackboard Work)	मूल्यांकन (Evaluation)

N · Rani

पुनरावृत्ति :–

गृह–कार्य :–

अन्य बिंदु :-

नवोन्मेष शोध नेतृत्व
JCERT

शिक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

प्रधानाध्यापक का हस्ताक्षर

N. Rani